## श्रम विभाग

## ग्रादेश

## दिनांक 15 मई, 1984

सं० मो.वि./एक. डी./36-84/18976.--चूंकि हरियाणा के राज्यसाल की राव है कि मै० एप० जी० स्टीत प्रा० लि०. प्लाट न० 6, सैक्टर-4, फरीदाबाद के श्रीमक श्री मेजा राम तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मोद्योगिक विवाद है:

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, घब, ग्रीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई जिल्ला का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साय पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदादाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यावनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रचा तंबंधित मामला है:---

क्या श्री मेवा राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 17 मई. 1984

स.स्रो.वि/जी.जी.एन./42-84/19524--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. राज मैटल दिल्ली रोड, रिवाई। के श्रमिक श्री जगदीश तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौढोगिक विवाद है ;

भौर चंकि हरिायाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :---

इसलिए, ग्रव, ग्रीहोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की धारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गर्ड शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा अरकारी ग्रिधिसूचना स. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11995-जी-श्रम/57/11245; दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित द्यश्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिणय के लिए निर्दिश्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंग्रह ग्रथवा संबंधित मामला है: -

क्या श्री जगदीश की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किसी राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./जी.जी.एन/17-84/19531.--चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राष्ट्रे है कि मैं० मारित उद्योग लि. पालम रोड, गृहगावां के श्रमिक श्री सतप्रकाण तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :---

इस लिए, ग्रब, ग्रोंद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हूं, जो कि उक्त प्रवधन्कों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है;

क्या श्री सतप्रकाश की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किसी राहत का हकदार है ?